International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-07-2020; Accepted: 30-07-2020; Published: 16-08-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 96-98

सूरदास के काव्य में माधुर्य एंव बाल चित्रण

गणपत लाल
सहायक आचार्य हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय कोटड़ा, उदयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावनाः परिचायात्मक भूमिका

सूर के पूर्व भी वात्सल्य रस के कवि हुए है और उनके पश्चात् भी। इस समस्त परम्परा में सूर का स्थान अग्रगण्य है। भारतीय साहित्य में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व साहित्य में सूर के वात्सल्य चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान है। सूर के पूर्व संस्कृत कवियों नें भी वात्सल्य वर्णन किया है इस द्ष्टि से रामायण, महाभारत, भागवत, कादम्बरी, हर्षचरित' दशकुमार चरित, रघुवंश अभिज्ञान शाकुन्तलम् उतररामचरित' आदि मे प्राप्त छिट–पुट वात्सल्य प्रंसग उल्लेख्य है। स्वयभू, पुष्पदन्त, धनपाल आदि अप्रभंश कवियो ने भी वात्सल्य का चित्रण किया है किन्तु अत्यल्प है। सूर पूर्व हिन्दी कवियो में चन्द्रबरदायी ने पृथ्वीराज के जन्मोत्सव तथा बाल छवि का वर्णन किया है। जायसी ने 'पदमावत' में रत्नसेन की माता का वियोग – वात्सल्य तथा बादल के रणक्षेत्र गमन के वर्णन में वात्सल्य रस की योजना की है। इस तरह वात्सल्य वर्णन की परम्परा तो अक्षुण्ण है पर सूर के वात्सल्य वर्णन में जो सर्वांगीणता तथा मार्मिकता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है, अष्टछापी कवियो तथा तुलसी आदि परवर्ती साहित्यकारों ने भी वात्सल्य रस पर लेखनी चलायी है किन्तु सूर जैसी उत्कृष्टता उनमें नहीं है।

वात्सल्य भाव के चित्रकारः–

सूर कृत 'सूरसागर' भाव जगत का काव्य है उसमें विविध भावो की अभिव्यक्ति हुई है। एक ही विषय से सम्बन्ध न जाने कितनें ही भाव चित्र सूरदास ने अंकित किये है। वात्सल्य रस के तो सूर सम्राट ही कहे जाते है। भावो की तो यही अनुभूति आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को यह कहनें को बाध्य कर सकी कि सूर बाल ह्रदय का कौना कौना झाक आये है रस की आधार भूमि यही भाव है। जब भाव तन्मयता के कारण सगन रूप धारण करता है और मानव ह्रदय देर तक आस्वादन करता रहता हुआ उसमें विहार करनें लगता है तभी रस की सृष्टि होती है इसकी इसी भूमिका में पहुचकर पाठक को अस्तित्व बोध नही रहता। 'भाव भेद रस भेद अपारा के अनुसार तो भाव तथा रस अनेक होते है किन्तु सूरदास से पूर्व नवरसो की स्थापना हो चुकी थी। भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र में आठ रसो की गणना की है – श्रृगार, हास्य, करूण, रोद्र, वीर, भयानक वीभत्स और अद्भुत। साहित्य दर्पण तक आते आते शान्त नामक नवम् रस को भी आचार्यो ने स्वीकार कर लिया था। यह तथ्य सूरदास को पढने से स्पष्ट हो जाता है। शान्त का सहवर्ती एक और रस है– भक्ति। सूरदास ने सभी रसो का चित्रण अपनें काव्य में किया है।

वात्सल्य निरूपण

वात्सल्य के दो भेद होते है – संयोग और वियोग वात्सल्य के पुनः चार भेद होते है (1) प्रवास को जाते हुए (2) प्रवास में स्थित (3) प्रवास से लौटते हुए (4) करूण विप्रलम्भ। सूरदास ने संयोग और वियोग दोनो ही पक्षो को ग्रहण किया है। किन्तु विस्तार की दृष्टि से उन्होंने संयोग वात्सल्य रस के आश्रय प्रमुख रूप से यशोदा और नन्द को ही चित्रित किया है किन्तु ब्रज के अन्य नर नारी भी इस भाव के आश्रय है। देवकी वसूदेव में भी यह भाव है किन्तु घनीभूत रूप मे यशोदा का वात्सल्य ही सूरदास ने चित्रित किया है। भक्ति रस की कोटि तक पहुचने वाला वात्सल्य माता यशोदा का ही है। संयोग रस में स्थायी भाव बाल– प्रेम है। आलम्बन बालक आश्रय माता पारिवारिक व्यक्ति अन्य सम्बन्धी आदि। उददीपन में बालक की शारीरिक चेष्टाएं, सौन्दर्य, बुद्वि, चातुर्य, बाल क्रीडा आदि है। अनुभाव – प्रसन्नता हास्य, गद्गद् हो जाना चूमना आदि तथा संचारी भाव – पुलक, स्मृति, हर्ष, विस्मय आदि।

बाल छवि अनुपम एंव अद्वितीय

निस्सन्देह ही कृष्ण की बाल छवि अत्यन्त अनुपम एंव अद्वितीय है जिसे देखकर "अमर मुनि मन चकित रह जाते है" "सखी री नन्दनन्दन देखू" तथा "बरनौ बाल वेश मुरारी" "देखिरी देख आनन्द कन्द" आदि पदो में सूर ने कृष्ण के अलौकिक एवं अद्भुत रूप की झॉकी प्रस्तुत की है, इसे देखते ही मन बाल कृष्ण के सहज सौन्र्दय में लीन हो जाता है तथा उनकी अपूर्व रूप माधुरी का पान करनें लगता है। कृष्ण की बाल सुलभ चेष्टाओं के साथ कैसे अपना हाथ माता को पकडाते है और जिस तरह डगमगाते पैर आगे बढाते है, इसे सूरदास ने इस प्रकार चित्रित किया है।

"सिखवत चलन जसोदा मैया।
अरबराइ कर पानि गहावत डगमगाइ धरनी धरे पइयां।"

दूसरा चित्र मक्खन खाते हुए बालक कृष्ण की उन चेष्टाओं का है जिनमें उन्हें मक्खन के साथ ब्रज – रस से सुशोभित देखा जा सकता है।–

"शोभित कर नवनीत लिये।
घुटुरूवन चलत रेनु तनु मण्डित, मुख दधि लेप किये।"

पैर का अगूठा चूसतें हुए कृष्ण का बडा ही स्वाभाविक चित्र सूरदास ने प्रस्तुत किया है–

"कर पग गहि अगूठा मुख मेलत।
प्रभु पौढे पालने अकेले, हरषि हरषि अपने रंग खेलत।"

बालक कृष्ण की किलकारी भरी हॅसी एवं मणिजडित ऑगन में अपनें ही प्रतिबिम्ब को पकडनें के लिए दौडना– इसका चित्रण बडा ही स्वाभाविक, आकर्षक और ह्रदयग्राही बन पडा है उदाहरणार्थ

"किलकत कान्ह घुटुरूवन धावत
मनिमय कनक नन्द के आंगन बिम्ब पकरिवे आवत।"

उक्त सभी बालक कृष्ण की स्वभाविक चेष्टाओं एवं क्रीडाओं के साकार रूप को प्रस्तुत करते है जिन्हें पकडकर सहसा ह्रदय में वात्सल्य भाव उमडनें लगता है।

बाल मनोभाव निरूपण

सूर ने बालको के हृदयस्थ मनोभावो बुद्धि, चातुर्य, स्पर्धा, खीझ, प्रतिद्वन्द्वता प्रत्युत्पन्नमति आदि का मनोरम चित्र खीचा है। कृष्ण को मक्खन अच्छा लगता है परन्तु माता यशोदा उन्हें दूध पिलाना चाहती है, वे आना– कानी करतें है। वह फुसलाकर उनकी चोटी बढानें का प्रलोभन देती है। उनके एक हाथ में दूध का कटोरा है, दूसरे को कृष्ण के बालो पर रखे है। इसका जीवन चित्र निम्नांकित पदो में दृष्टव्य है–

"मैया कबहि बढेगी चोटी

किती बार मोहि दूध पिवत भई, है अजहूँ यह छोटी, काचो देध पियावत मोंको देत न माखन रोटी।" दूसराचित्र कृष्ण की बाल सुलभ सफाई का है। मक्खन खाते हुए पकडे गये है, किन्तु पकडे जाने पर चतुर कृष्ण कितना साफ बहाना बनाते है–

"मैया मैनहि माखन खायो"

चार पहर बंसी बट भटक्यो सॉझ परे घर आयो में बालक बहियन को छोटो छीको केहि विधि पायो ग्वाल बाल सब बैर परे है बरबस मुख लपटायो तूही निरख नान्हें कर अपने मै कैसे करि पायो।"

बालक कृष्ण मक्खन चोरी द्वारा गोपियो को भी रिझा रहे है। एक दिन पकडे जाने पर चतुरता से भरा हुआ कितना सुन्दर उत्तर देते है।

"मै जानयो या मेरो घर है ता धोखे ते आयो। देखत हो गोरस में चींटी काढत को कर नायो।"

सूर का वात्सल्य वर्णन इतना विशद एवं विराट् और व्यापक है कि बालको के संस्कार उत्सवो एवं समारोह का वर्णन भी उन्होंने साधिकार किया है कृष्ण की वर्ष गांठ के अवसर पर मां यशोदा कितनी प्रसन्न है इसका जीवन दृश्य प्रस्तुत है।

"अरी मेरे लालन की आजू बरस गांठ सबै,
सखिन को बुलाई मंगल गान करावौ।
चन्दन आंगन लिपाई औतियन चौक पुराई,
उमंग आंगिन सौ तूर बजाबौंए,

माधुय चित्रण

सूरदास जी आचार्य वल्लभ के शिष्य थे। उनके सम्प्रदाय में माधुर्य को बहुत महत्व दिया गया है। वल्लभाचार्य की अपेक्षा विट्ठलदास के समय मे इसे अधिक महत्व दिया गया है। विट्ठलदास ने माधुर्य भक्ति के स्वरूप का वर्णन श्रंगार मण्डन में विस्तार से किया है। विट्ठलदास के समय युगल सरकार की उपासना का महत्व बढ गया था। लौकिक प्रेम के सभी स्वरूप जब लोक से हटा कर ईश्वर से सम्बंधित कर दिये जाते है तो वे माधुर्य भक्ति के अन्तर्गत आते है गोस्वामी विट्ठलदास जी के अनुसार यह किया भक्त के मन के सभी विकार दूर करनें का सर्वोतम साधन है। इसी कारण मधुरा भक्ति मे जो श्रंगारी सम्बंध ईश्वर के साथ जोडे जाते है वे लौकिक आलोचना के विषय नहीं बन सकते, परमात्मा के साथ जोडे गये सभी सम्बंध पवित्र होते है। दाम्पत्य भाव की भक्ति कहते है।

माधुर्य भक्ति में संयोग और वियोग

माधुर्य भक्ति रस में श्रंगार रस की भॉति संयोग तथा वियोग दोनो पक्ष होते है स्वकीया और परकिया दोनो भावों की रति उसमे रहती है। इन भक्ति रस में प्रीति काम रूप भी हो सकती है और सम्बंध रूप भी। सूरदास की भक्ति में ये सभी रूप विधिवत चित्रित हुए है। माधुर्य भक्ति के प्रसंगो में सूरदास जी ने स्त्री भाव के अन्तर्गत परकिया कि अपेक्षा स्वकीया को अधिक महत्व दिया है। इसी भाव के साथ उन्होनें श्रीकृष्ण के साथ सामीप्य स्थापित किया है। गोपियो की कृष्ण के प्रति जो प्रीति है वह कामरूपा है किन्तु भक्ति भावना में यह कामरूपा प्रीति भी निष्काम हो गयी है। निष्काम भावना के कारण ही गोपियो की प्रीति संयोग और वियोग दोनो अवस्थाओ में एक रूप है। आत्मसमर्पण और अनन्य भाव इस भक्ति के लिए आवश्यक माने गये है। सूरदास के अनतर्गत रास लीला, चीरहरण और दान लीला के प्रसंग आत्मसमर्पण और अनन्यभाव के उत्कृष्ट उदाहरण है। सूरदास ने गोपियो के पूर्वराग से लेकर मधुरा भक्ति के पूर्ण विकास तक का सुन्दर चित्रण किया है।

सूरदास की माधुर्य भक्ति के संयोग और वियोग दोनो पक्षो का चित्रण उनके काव्य में हआ है। जिस पर प्रकाश डालना यहॉ उचित ही प्रतीत होता है आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कृष्ण और गोपिकाओं के इस प्रेम सम्बध के विषय मे लिखा है कि इस प्रेम को हम जीवनोत्सव के रूप में पाते है सहसा उठ खडे हुए तूफान या मानसिक विप्लव के रूप में नही।

सूर की गोपियॉ उद्वव से कहती है।– "लरिकाई के प्रेम कहो अलि कैसे छूटे।" यह साहचर्यजन्य अनुराग था। इसी से इनमें इतनी अथाह गहराई थी कि जिसका पार पाना कठिन है। श्याम के सौन्दर्य ने तो "वन उपवन सरिता सब मोहे" भला फिर गोपियॉ उस अनन्त सौन्दर्य के प्रभाव से कैसे मुक्त रह सकती थी। गोपियो का कथन है कि "सूर श्याम बिनु और न भावे कोउ कितनो समुझावै।"

राधा कृष्ण के पारस्परिक प्रेम का चित्रण द्रष्टव्य है–"सूर श्याम देखत ही रीझे नैन नैन मिली परी ठठौरी" कृष्ण राधा से कहते है–

"बुझत श्याम कौन तू गौरी।

कहा रहति काकी है बेटी, देखी नाहि कबहु ब्रज खोरी।।
काहे को हम ब्रज तन आवति, खेलति रहति आपुनी पोरी।
सुनत रहत श्रवनन नन्द ढोटा, करत फिरत माखनदधि चोरी।।
तुमरो कहा चोर हम लियो, खेलन चलो संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि, बातनि भुरइ राधिका भोरी।।"

यहि प्रथम परिचय धीरे धीरे खेल कूद परिहास आदि के सहारे प्रणय में परिणत होने लगा। मान आदि के प्रसंग भी आये जिनका सूर ने अत्यन्त मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया है परन्तु यह प्रेम बढ़ता ही गया और मान आदि की अवस्थाएं उसमे सहायक ही सिद्व हुई वास्तव में प्रेम भाव से ही कृष्ण और राधा का रूप और भी मनोहारी स्थिति को प्राप्त होने लगा।

राधा कृष्ण में धीरे– धीरे प्रेम पल्लवित होने लगा, नयनो से नयनो में बात होने लगी कृष्ण का आमंत्रण स्वीकार करके राधा गोकुल का फेरा लगाने को राजी हो गयी–

"प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यौ।
नैन नैन कीन्हीं सब बात, गुप्त प्रीति प्रकटान्यौ।
खेलन कबहु हमारे आयहु, नन्द सदन ब्रज गाउँ
द्वारै आइ हेरि मोहि लीजौ, कान्ह हमारो नाउँ।

सूर रसवादी कवि है और यह सिद्व है कि उन्हें भारतीय काव्य परम्परा का सम्यक ज्ञान है। अतएवं श्रंगार रस के संदर्भ में हाव भावादि तथा नायक नायिका के सम्बन्ध में जो निरूपण साहित्य शास्त्र में हुए है उनका सम्यक बोध उन्हें प्राप्त था कृष्ण भॉति भॉति से राधा को देखकर मोहित होने लगे एक खिलवाड दर्शनीय है।

"धेनु दुहत अति ही रति बाढी।?
एक धार दोहनि पहुचावत, एक धार जहॅ प्यारी ठाढी। "

और इस पर राधा का उत्तर

"तुम पै कौन दुहावै गैया।
इत चितवत उत धार चलावत, एहि सिख्यो है मैया।"

संदर्भ सूची

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी– 'सूर साहित्य' पेज नम्बर 77.
2. डॉ. दशरथ राज– 'सूर साहित्य विर्मश' पेज नम्बर 24.
3. कृष्ण देव झारी– 'अष्टाछाप के कवि पेज' नम्बर 88.
4. डॉ. हरवंश लाल शर्मा– 'सूरदास और उनका साहित्य' पेज नम्बर 189.